सम्पादकीय

तिब्बत की ओर बाबा नानक की उदासी का महत्व

अपने जीवनकाल में श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने पांच उदासियां या प्रवास किए। ये सभी अलग-अलग दिशाओं में थे। इनमें से दो उदासियां सामरिक दृष्टिकोण से आज भी महत्वपूर्ण नजर आती है। इनमें से एक उदासी मक्का की ओर और दूसरी उदासी तिब्बत की ओर की गई थी। पश्चिम से खैबर दर्रे को पार कर इस्लामी आक्रान्ता भारत पर चढ़ आता था। जो मजहबी और राजनैतिक दर्शन इन आक्रमणकारियों के मन मस्तिष्क में था, वह मक्का के क्षेत्र में उपजे मजहब की देन था। यह जहां शोध का विषय था, वहीं यह भारत के लिए प्रतिकार का विषय भी था। बाबा नानक मक्का गए और जब लौटे तो अपने सम्पूर्ण समाज को ऊर्जा की प्राप्ति हुई। जिस अफगानिस्तान के गजनी शहर के मोहम्मद गजनवी ने भारत को लूटा, यहां के मन्दिरों को ध्वस्त किया। उस गजनी शहर को इतिहास के महान योद्धा सरदार हरिसिंह नलवा ने जीता और काबुल पर कब्जा किया। मक्का की उदासी पश्चिमी दिशा से आने वाले खतरों के खिलाफ लड़ने का जीवन दर्शन लेकर आयी।

इसी प्रकार गुरु नानकदेव जी महाराज ने सुदूर तिब्बत क्षेत्र की ओर प्रवास किया। वे लेह-लद्दाख, तिब्बत, ताशकन्द, मानसरोवर, सिक्किम आदि क्षेत्रों के प्रवास पर गए। इस उदासी का अन्तिम भाग पूर्वोत्तर के पर्वतीय क्षेत्र थे। यह संयोग है कि आज पांच सौ वर्ष पूर्व गुरु नानकदेव जी ने अपने तिब्बत प्रवास में जिन-जिन स्थानों की यात्रा की, उन-उन स्थानों को आज सुरक्षा की दृष्टि से खतरा है।

''राजशक्ति बन्दूक की नली से निकलती'' की बात करने वाले कम्युनिस्ट न केवल चीन पर काबिज हुए और एक तानाशाही हुकूमत बना पाए, बल्कि उन्होंने तिब्बतवासियों पर असहनीय अत्याचार करते हुए तिब्बत पर कब्जा भी किया। महामहिम दलाईलामा को भारत में संरक्षण के लिए आना पड़ा। अपने देश की संस्कृति से मेल खाने वाला यह भूभाग राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों के हत्थे चढ़ गया। यह भारत की विडम्बना थी कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने पूरे विषय को भारतीय तत्व ज्ञान के सूक्ष्म दृष्टिकोण से नहीं देखा। वे जीवनभर गोरा साहिब के नजरियें से इस विषय की पड़ताल में उलझे रहे।

तिब्बत में गुरु नानकदेव जी को स्थानीय लोगों ने आदरपूर्वक रिम्पोछे नानकलामा नाम से सम्बोधित किया। निश्चित ही, कई दिनों के प्रत्यक्ष संवाद की स्थितियों के बाद ही ऐसे हालात पैदा हुए होंगे। तिब्बत से जीवन्त संबंध के बने रहने के महत्व को गुरु नानकदेव जी ने समझा था। इस महत्व को तथाकथित सेक्युलरिस्ट नहीं समझ पाए। राजनीति क्षेत्र में तीन किस्म के परिभाषिक शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। भारत के संविधान में एक शब्द प्रयोग हुआ है-पंथ निरपेक्ष। भारतीय संविधान के इस शब्द का सम्मान होना चाहिए था। जो नहीं हुआ। राजनैतिक पार्टियों द्वारा एक शब्द प्रयोग में लाया जाता-धर्मनिरपेक्ष। श्री गुरु नानकदेव जी के जीवन दर्शन से निकला एक अन्य शब्द है-सांझीवालता। यह शब्द 'सांझीवालता' अकालपुरख या ईश्वर के अस्तित्व पर आधारित है। इसीलिए यह निष्कलंक है, सत्य है और इसीलिए सांझीवालता जीवन की आवश्यकता है। 'धर्म निरपेक्ष' शब्द वोट बैंक पर आधारित है। इसीलिए मिथ्या व घोर कष्ट कारक शब्दावली है। नेहरूवादियों की धर्मनिरपेक्षता के सापेक्ष गुरु नानकदेव जी की सांझीवालता का जीवन दर्शन श्रेष्ठ हैं। नेहरूवादियों की धर्मनिरपेक्षता से तिब्बत समस्या पैदा होती है। सांझीवालता से तिब्बतियों से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित होते हैं। सांझीवालता तिब्बत को पुन: स्थापित करने का मूल मंत्र हैं। सांझीवालता गुरु नानकदेव जी की तिब्बत उदासी का केन्द्र बिन्दु भी है। स्वतंत्र तिब्बत भारत की स्वतंत्रता के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आज दलाईलामा तिब्बत की राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं। जब दलाईलामा श्री हरिमन्दिर साहिब अमृतसर गए थे, तो उन्होंने गुरु नानकदेव जी के सांझीवालता वाले जीवन दर्शन को महत्वपूर्ण बताया था। भारत के लोग आगे आएं, छद्म धर्म निरपेक्षता त्यागें, गुरु नानकदेव जी की सांझीवालता को अपनाएं।

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री